संन्यास को सार्थक बनाने वाले स्वामी सहजानन्द



-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

संन्यास को सार्थक बनाने वाले—

स्वामी सहजानंद

एक समय था, जब हमारे देश में संन्यास-आश्रम का बड़ा महत्त्व था। भारतीय मनीषियों में व्यक्ति और समाज की चिरंतन प्रगति और विकास की दृष्टि से मनुष्य-जीवन के कार्य-काल को चार भागों (आश्रमों)—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में विभाजित कर दिया था। इस व्यवस्था का उद्देश्य मनुष्य को एक ऐसा नियमित और विधिवत् प्रशिक्षण देना था, जिससे उसकी समस्त शक्तियों का समुचित विकास हो सके और वह समाज की सेवा तथा उन्नति में भाग ले सकने की वास्तविक योग्यता प्राप्त कर सके। जब कोई व्यक्ति ब्रह्मचर्य-आश्रम में रहकर शारीरिक और मानसिक शक्तियों की वृद्धि करके गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करता था, तो वह अपने पारिवारिक तथा सामाजिक कर्तव्यों की कहीं अधिक अच्छे रूप में कर सकने में समर्थ होता था। तब तक उसका कार्यक्षेत्र समीपस्थ व्यक्तियों तक ही सीमित रहता था।

गृहस्थ-आश्रम की अवधि पूरी हो जाने पर वह वृहत्तर-समाज की सेवा करने के लिये वानप्रस्थ आश्रम में प्रविष्ट होता था और त्याग तथा तपस्या का जीवन अपनाकर अपने को चौथे आश्रम (संन्यास) के उपयुक्त बनाने का प्रयत्न करता था। जिस प्रकार गृहस्थ का शिक्षणशाला ब्रह्मचर्य आश्रम था, उसी प्रकार संन्यास की योग्यता और कर्तव्यपालन करने का शिक्षालय वानप्रस्थ था।

उस समाज-व्यवस्था में संन्यासी वास्तव में समाज का निरीक्षक, व्यवस्था, संचालक था। आज समाज में छोटे-बड़े सब श्रेणियों के व्यक्ति स्वार्थपरता की दृष्टि से घोर भ्रष्टाचार कर रहे हैं, पर कोई उनको टोकने वाला, उनकी गतिविधियों के विरोध में किसी प्रकार का प्रभावशाली कदम उठाने वाला सामने नहीं आता। कारण यही है कि इस प्रकार का दूषित आचरण करने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तियों की संख्या दस-पाँच नहीं है, वरन् १०० में से ६८ मनुष्य इसी ढर्रे पर चल रहे हैं। जब समाज के सभी सदस्य जीवन के अंतिम समय तक इसी स्वार्थपरता की नीति पर चलते रहते हैं, तो वे दूसरों को किस मुँह से दोषी बतला सकते हैं अथवा समाज विरोधी कार्यों से विरत होने का आदेश दे सकते हैं ?

पर प्राचीन समय में संन्यास-आश्रम एक ऐसी संस्था थी, जो समाज के निरीक्षण और नियंत्रण का कार्य अच्छी तरह कर सकती थी। वे पूर्ण रूप से संसार त्यागी होते थे, परिवार से सर्वथा नाता तोड़ लेते थे और प्राणीमात्र को आत्मीय मानकर अपनी शक्तियों को सार्वजनिक-कल्याण के लिये अर्पित कर देते थे। वे सर्वत्यागी होते थे, अपनी भोजन, वस्त्र, निवास संबंधी आवश्यकताओं को न्यूनतम स्तर तक घटा देते थे, इसलिये किसी तरह का लोभ-लालच, दबाव, भय उनको कभी प्रभावित नहीं कर सकता था। वे समाज के अनाचारी, दुराचारी व्यक्तियों की तुरंत भर्त्सना करते थे, उनके लिये सामाजिक दंड का आदेश देते थे और आवश्यकता होने पर स्वयं भी उनको कभी दंड प्रदान करते थे। संभवतः दंडी-संन्यासियों का सदैव दंड-ग्रहण करना उसी व्यवस्था का प्रतीक हो, जो आज एक रूढ़ि-मात्र रह गया है। उस समय संन्यासी की स्थिति समाज में सर्वोपरि थी। वे समाज के नेता और विधायक थे और स्वयं त्याग और समाज-कल्याण का उच्चतम आदर्श उपस्थित करके, समाज को भी जनहितकारी कार्यों के लिये प्रेरित करते रहते थे।

पर जैसे-जैसे समय बीतता गया अनेक बाह्य और अंतरंग प्रभावों के कारण अन्य संस्थाओं की तरह 'संन्यास' में भी विकृतियाँ प्रविष्ट होने लगी और अंत में ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई कि 'संन्यासी' का अर्थ केवल भिक्षुक ही रह गया। आज देश हितैषी विचारों के व्यक्ति 'साधु-संन्यासियों' के ऊपर आक्षेप करते हैं और उनको 'अन्न खराब करने' वाला बतलाते हैं। उसका कारण यही है कि उन्होंने लोकोपकार की प्रवृत्तियाँ छोड़ दी हैं और अपना समस्त समय 'पेट की चिंता' में ही लगाते रहते हैं। जो इससे कुछ ऊँचा उठते हैं, वेदांत संबंधी आध्यात्मिक ग्रंथों के पठन-पाठन अथवा थोड़ा-बहुत योगसाधना में समय व्यतीत करते हैं। उनकी संख्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कम ही है। यद्यपि ये प्रवृत्तियाँ बुरी नहीं हैं, तो भी जन-कल्याण की दृष्टि से इनका कोई महत्त्व नहीं समझा जा सकता।

ऐसी परिस्थितियों में स्वामी सहजानंद (जन्म १८८६) ने काशी के मठों में सुविधापूर्वक रहने के जीवन-क्रम को त्यागकर, देश के स्वतंत्रता-संग्राम और विशेषतः जमींदारों के अत्याचारों से पीड़ित किसानों के उद्धारार्थ आरंभ किये गये आंदोलन में आगे बढ़कर भाग लिया। यह एक संन्यासी की दृष्टि से विशेष महत्त्व की बात थी। वे गाजीपुर (उ० प्र०) के एक गाँव के निवासी ब्राह्मण थे और बाल्यावस्था में हाईस्कूल में नौवें दर्जे तक शिक्षा प्राप्त करके १८ वर्ष की आयु में संन्यासी बन गये थे। आरंभ में उनका उद्देश्य मुख्य रूप से शास्त्राध्ययन और योगाभ्यास था, पर जब देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करते हुए सामान्य जनता की दुरावस्था देखी और उनके ऊपर होने वाले तरह-तरह के अन्यायों, अत्याचारों की कथायें सुनीं, तो उनकी मनोवृत्ति बदलने लगी।

जातीय सुधार की चेष्टा—

स्वामी सहजानंद के सार्वजनिक जीवन का क्रमिक विकास सामाजिक घटनाओं से किस प्रकार होता गया, यह भी एक उल्लेखनीय विषय है। संन्यास लेने के पाँच-सात वर्ष तक तो वे काशी में रहकर अध्ययन और साधना करते रहे। सन् १९१४ में उनको बलिया में होने वाली "भूमिहार ब्राह्मण महासभा" में निमंत्रित किया गया। वहाँ पर उन्होंने ब्राह्मण-धर्म पर कई व्याख्यान दिये। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि "यद्यपि पुरोहिती का कार्य ब्राह्मणों का है, पर वर्तमान परिस्थिति में पुरोहित-कर्म की अपेक्षा खेतीबारी का कार्य कहीं अधिक श्रेयस्कर है।" उसके पश्चात् उन्होंने समस्तीपुर, दरभंगा तथा अन्य अनेक स्थानों की सनातन-धर्म-सभाओं में इसी सिद्धांत का प्रचार किया। उनका यह प्रचार देश और समाज के लिये कितना हितकारी था, इसे वे ही लोग जान सकते हैं, जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में कृषिकर्म का बहिष्कार करने वाले ब्राह्मणों की आर्थिक दुरावस्था को देखा, समझा है। इस प्रकार के ब्राह्मण अपनी जमीन के जुताने के लिये अन्य जाति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हलवाहों पर आश्रित रहते हैं और ठीक समय पर जब उनको जोतने वाले नहीं मिलते, तो उनकी उपज में दूसरे लोगों की अपेक्षा काफी अंतर पड़ जाता है।

स्वामी जी ने इस बात को उसी समय समझ लिया था और लोगों को समझाया था कि खेती के काम में किसी प्रकार की हिंसा या पाप की कल्पना करना मूढ़ता का लक्षण है। शास्त्रों के अनुसार भी प्रतिग्रह (दान) ग्रहण करना हीनता का चिह्न है, जिससे मनुष्य का निश्चित रूप से आत्मिक पतन होता है। किसी प्रकार का शारीरिक श्रम करके निर्वाह करना, कभी पाप का कारण नहीं हो सकता। जिन लेखकों ने कृषिकार्य में 'हिंसा' होने की बात लिखी है, उन्होंने भावुकतावश ही ऐसा लिखा होगा। ऐसे लोगों ने गृहस्थी के चक्की, चूल्हा, झाड़ू लगाना आदि कामों को भी हिंसायुक्त बतलाकर 'पंच सून' पापों के अंतर्गत माना है और उनसे छुटकारा पाने के लिये 'पंच महायज्ञों' की व्यवस्था की है! अगर पाप की ऐसी व्याख्या की जाए, तो सब प्रकार की कारीगरी, कल-कारखाने जिनमें हजारों मन कोयला जलाया जाता है और विशालकाय मशीनें चलती रहती हैं 'घोर-पाप' माने जायेंगे। पर इन्हीं उद्योग-धंधों का संचालन करने वाले 'सेठों' से दान प्राप्त करके पंडित, पुजारी, पंडे आदि उनको 'धर्म मूरत' की पदवी देते रहते हैं। स्वामी जी ने इस समस्या पर विचार करते हुए अपनी उस समय की स्थिति को इन शब्दों में प्रकट किया था—

"सामाजिक बातों की तरफ अभी तक मेरी प्रवृत्ति न थी। धर्म तो मेरा विषय होना ही चाहिए, संन्यासी जो ठहरा। मगर सामाजिक काम तो स्थूल दृष्टि 'धर्म' के भीतर नहीं आता। इसलिये उस ओर सहसा मेरी प्रवृत्ति नहीं हुई। असल में तब तक उसका महत्त्व और उसकी असलियत मैं हृदयंगम कर ही न सका था। पोथियों, ग्रंथों और व्याख्यानों से यह बात ठीक-ठीक समझी जाती भी नहीं। यह तो घटनाओं का ही काम है, जो मानस-पटल पर उसकी महत्ता, उसके बड़प्पन, उसकी कर्तव्यता को अंकित कर दे और बलिया में यही बात हुई। निस्संदेह भूमिहार—ब्राह्मण-समाज में ब्राह्मणोचित आचरणों की बड़ी कमी है और इस कारण अन्यान्य लोग इस संबंध में तरह-तरह की 'कुत्सित' और निराधार बातें कहते रहते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। इसके फलस्वरूप इस समाज के कितने सच्चे सेवक मर्माहत हुआ करते थे। उनके भीतर तड़प थी कि कैसे इसका समुचित प्रतिकार किया जाय ? वे लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार यह काम करते भी थे, मगर यह कार्य उनके लिये समुद्र-मंथन या हिमालय पर चढ़ने के समान था। मैंने यह भी अनुभव किया कि उन लोगों में आत्मविश्वास की कमी थी।"

पर अब स्वामी जी के सम्मुख यह समस्या आई कि वे संन्यासी होकर किसी विशेष जाति के कार्य में भाग लें या न लें। संन्यासी होते समय जो 'विरजा होम' संस्कार आदि किये जाते हैं, उनमें जात-पाँत, संप्रदाय आदि के समस्त बंधन त्याग दिये जाते हैं और यज्ञोपवीत तोड़कर तथा शिखा को उखाड़कर जल में फेंक दिया जाता है। इसका आशय यही माना जाता है कि संन्यास ग्रहण करने वाला व्यक्ति अपने आत्मस्वरूप को समझकर लौकिक-बंधनों से किसी प्रकार का संबंध न रखेगा। इसलिये वे शास्त्रों द्वारा इस प्रकार की छान-बीन करने लगे कि इस प्रकार के कार्यों में भाग लेना संन्यासी के लिये धर्मानुकूल है या नहीं ? इसके लिये उनको 'श्रीमद्भागवत' में भगवान् नरसिंह और भक्त प्रवर प्रह्लाद के वार्तालाप के प्रसंग में यह श्लोक मिला।

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्ति कामा।
मौनं चरन्ति विजने न परार्थ निष्ठा।।
नैतान् विहाय कृपणान् विमुक्ष एको।
नान्यत्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये।।

अर्थात्—"ऋषि-मुनि लोग तो स्वार्थी बनकर अपनी ही मुक्ति के लिये एकांत वास करते हैं। उन्हें औरों की चिंता नहीं होती। मैं ऐसा नहीं करना चाहता। सभी दुःखियों को छोड़, मुझे केवल अपनी मुक्ति नहीं चाहिए। मैं तो इन्हीं के साथ रहूँगा।"

इस प्रकार स्वामी जी को प्राणायाम और समाधि के बजाय जन-सेवा की रुचि उत्पन्न हो गई। कुछ लोगों ने इस प्रकार के जातीय-काम में भाग लेने को संन्यास-धर्म के विरुद्ध बतलाया भी। पर स्वामी जी ने इस तरह की बातों पर कोई ध्यान इसलिये नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिया कि उन्होंने यह काम किसी स्वार्थभावना से नहीं किया था। जब उन्होंने देखा कि समाज का एक बड़ा समुदाय अन्यायपूर्ण व्यवहार के कारण दुःखी हो रहा है और धूर्त तथा अहंकारी व्यक्ति उसके ईमानदारी के कर्तव्यपालन की झूठ-मूठ निंदा-कुत्सा करते हैं, तो उनका हृदय तड़प उठा और वे आवेश में आ गये। उन्होंने पीड़ित समुदाय को सहायता देकर उठाने की चेष्टा की और अपमानित करने वालों के दिमाग अपनी दृढ़ता और और वीरता से ठंडे कर दिये। हम नहीं समझते कि स्वामी जी ने एक ऐसा कार्य करके किसी तरह की बुराई की। यदि किसी का हक छीन लिया गया हो, तो उसकी सहायता को तैयार होकर चोर-लुटेरों से उसे वापस दिलाना, शुभ-कार्य ही कहा जायगा। स्वामी जी समष्टि रूप से समस्त समाज का उत्थान करने को ही सेवा-धर्म का पालन करना ही मानते थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये वे सार्वजनिक आंदोलन में कूद पड़े। इसमें उनका उद्देश्य न तो किसी व्यक्ति विशेष को नीचे गिराकर निंदित करना था और न वे किसी प्रकार के राजनीतिक दाव-पेंच चलाने का विचार रखते थे।

स्वामी जी ने परोपकार-भावना से प्रेरित होकर इस कार्य को हाथ में लिया और बिहार का दौरा करके वहाँ भूमिहारों के साथ मैथिल, सरयूपारीण, कान्यकुब्ज आदि ब्राह्मणों के खान-पान, विवाह-संबंध आदि के विषय में जाँच करने लगे। उनके सहकारी स्वामी पूर्णानंदजी प्रयाग, गोरावपुर, फतेहपुर आदि का भ्रमण करके कान्यकुब्ज तथा सरयूपारीणों के साथ भूमिहारों का कहाँ-कहाँ संबंध हुआ है, इसकी जाँच करने लगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस संबंध में अनेक संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी ग्रंथों को भी पढ़ा। इन तमाम सामग्री के आधार पर उन्होंने "भूमिहार ब्राह्मण परिचय" नाम का ४०० पृष्ठ का एक बड़ा ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में प्रकाशित होते ही 'पंचगौड़' ब्राह्मण जातियों में एक प्रकार की सनसनी फैल गई।

स्वामी जी चारों तरफ घूम-घूम कर इस विषय पर जोरदार भाषण करने लगे, जिससे भूमिहार-समाज में एक अभूतपूर्व जागृति दिखाई पड़ने लगी। वे जहाँ-जहाँ जाते थे, लोग उत्साहपूर्वक उनका स्वागत करते और हर प्रकार का सहयोग करने को तैयार होते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर अब भी समाज के धनी और जमींदार लोगों से बहुत कम सहयोग प्राप्त होता था। वे सर्वसाधारण की जागृति से प्रसन्न नहीं थे, क्योंकि उन्हें यह संभावना जान पड़ती थी कि यह जागृति किसी दिन अन्यायी जमींदारों के विरुद्ध भी मुड़ सकती है और संयोगवश उनकी यह आशंका आगे चलकर सचमुच ठीक निकल गई। इस जातीय आंदोलन से स्वामी जी का प्रभाव अनेक गाँवों में स्थायी रूप से पड़ा और इसके द्वारा आगे चलकर उनको अपने 'किसान-आंदोलन' में अनेक सहयोगी और कार्यकर्ता प्राप्त हुए।

असहयोग आंदोलन में—

जिस समय स्वामी जी गाजीपुर और उससे मिले-जुले बिहार के जिलों में जातीय-आंदोलन कर रहे थे, उसी समय देश में रौलट एक्ट के विरुद्ध गांधी जी का आंदोलन आरंभ हुआ और जलियां वाला बाग का भीषण नरमेध हुआ। इन समाचारों ने स्वामी जी को बहुत प्रभावित किया और वे भी गांधी जी का साथ देकर इस जन-आंदोलन में भाग लेने की इच्छा करने लगे। जब गांधी जी प्रचारार्थ दौरा करते हुए पटना आये, तो वे उनसे मिले और आंदोलन के संबंध में काफी देर बातें की। जब गांधी जी ने उनके सब प्रश्नों का संतोषजनक रूप से समाधान कर दिया तो वे निस्संकोच भाव से असहयोग-आंदोलन में सम्मिलित हो गये।

इसके कुछ ही दिन बाद वे कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने नागपुर पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि अब तक जो कांग्रेस **"भिक्षां देहि"** की नीति पर चल रही थी, अब उसने **"युद्धं देहि"** की घोषणा कर दी है। यह नीति जोशीले स्वामी जी को पसंद थी। कांग्रेस में उनकी भेंट जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य श्री भारती कृष्णतीर्थ से हुई। ये दोनों दंडी संन्यासी थे, इससे परस्पर विशेष घनिष्ठता बढ़ गई।

अब स्वामी जी गांधी जी के पक्के भक्त बन गये और अपने कार्य क्षेत्र बक्सर में आकर कांग्रेस कार्यक्रम का प्रचार करने लगे। देहातों का दौरा करते समय रामगढ़ के पुलिस दरोगा ने इनको वहाँ से चले जाने को कहा, पर उन्होंने इस धमकी की कुछ परवाह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं की। कितने ही गाँवों के निवासी उनके प्रचार-कार्य के फलस्वरूप कांग्रेस में शामिल हो गये। अनेक अमीर लोगों ने स्वदेशी व्यवहार की प्रतिज्ञा करके विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। वे गांधी जी के हर एक आदर्शों का श्रद्धापूर्वक पालन करते थे और अनेक अन्य लोगों से भी कांग्रेस का सदस्य बनने का आग्रह करते थे। वे बिना जूता पहिने नंगे पैरों गाँवों का दौरा करते थे, जिससे उनके पैरों में बहुत अधिक बिवाई फट गईं, तो भी वे किसी तरह दौरा करते ही रहे और अनेक नये कार्यकर्ता तैयार करके कांग्रेस आंदोलन को आगे बढ़ाते रहे। जो स्वामी जी एक-दो वर्ष पहले जातीय-सभा का प्रचार करने के लिये हाथी पर चढ़कर घूमते थे और स्थान-स्थान पर जिनकी आरती उतारी जाती थी, वे गांधी जी के अनुयायी बनकर पैदल ही सब जगह जाने लगे और गरीब किसानों के यहाँ ठहरकर, रूखी-सूखी रोटी खाकर, स्वतंत्रता का शंखनाद करने लगे। प्रत्येक जन-आंदोलन में भाग लेने वाले का उचित मार्ग यही है कि वह सामान्य जनता के स्तर से अधिक ऊँचा रहन-सहन न रखें। यहीं से स्वामी जी का घनिष्ठ संबंध किसानों से आरंभ हुआ, जिसने कुछ वर्ष बाद स्वतंत्र किसान आंदोलन का रूप धारण कर लिया।

छोटे-बड़े जमींदार और बड़े धनवान् अब भी अधिक संख्या में सरकार के भक्त थे। इसलिये स्वामी जी उनकी तरफ ध्यान न देकर सामान्य किसानों में ही काम करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जब बाबू राजेंद्र प्रसाद 'तिलक फंड' का चंदा करने आये, तो आगरा जैसे नगर में उनको केवल तीन सौ रुपया मिला, जबकि बक्सर तहसील में, जहाँ स्वामी जी का कार्य क्षेत्र था, एक हजार चंदा हो गया। सन् १६२१ में जब प्रिंस ऑफ वेल्स नवीन शासन विधान लागू करने के लिये भारतवर्ष में आये और कांग्रेस ने उनके बायकाट करने की घोषणा की, तो स्वामी जी ने घनघोर प्रचार करके ददरी (बलिया) के प्रसिद्ध मेले में हड़ताल करा दी। सरकारी अफसरों ने हड़ताल रोकने का बहुत प्रयत्न किया, पर उनकी एक न चली। वे स्वामी जी को गिरफ्तार कर सकते थे, पर उस दशा में हड़ताल और भी अधिक फैल जाती। इसको लोगों ने उनकी एक बड़ी जीत समझा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार एक-दूसरे अवसर पर उन्होंने कांग्रेस के आदेश को अमान्य करके प्रांतीय कौंसिल की सदस्यता के लिए खड़े होने वाले हथुआ नरेश का विरोध किया और उनको हराकर कांग्रेस की धाक सर्वत्र जमा दी।

अब उन्होंने अपने प्रचार-कार्य का मुख्य केंद्र शाहाबाद जिले का सिमरी कस्बा बनाया, जो जीवन के अंतिम समय तक उनका साथ देता रहा। यहाँ उनकी श्रीराम सुभग पांडे और रामदर्श पांडे आदि ऐसे दृढ़ कार्यकर्ता मिले, जिन्होंने हर तरह के कष्ट सहन करके आंदोलन में सदैव साथ दिया। इसके लिए ये लोग अनेक बार जेल गये, पुलिस की लाठियाँ खाईं, तरह-तरह के अपमान सहन किये। श्री रामदर्श की तो एक आँख भी इसी दुर्व्यवहार में फूट गई, पर उन्होंने कभी पीछे पैर नहीं हटाया। सार्वजनिक कार्य के संचालनकर्ता का यह भी एक आवश्यकीय गुण है कि वह अन्य लोगों को कार्य करने की ऐसी प्रेरणा दे सके कि वे अपने व्रत पर अटल रहें और सब प्रकार के भय, प्रलोभन, उत्पीड़न का सामना करते हुए लक्ष्य तक पहुँच सकें। पर यह तभी संभव होता है, जब वह स्वयं भी सब प्रकार के स्वार्थ त्याग और कष्ट-सहन को तैयार हो।

ददरी (बलिया) के मेले के पश्चात् स्वामी जी ने अपना दूसरा कार्य क्षेत्र गाजीपुर को भी बनाया, जो उनका अपना जिला था। कुछ समय पश्चात् अहमदाबाद कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसमें स्वामी जी भी भाग लेने को पहुँचे। उस समय देश में राजनीतिक आंदोलन का तूफान उठा हुआ था और सरकार गांधी जी के प्रभाव से काँपने लगी थी। स्वामी जी ने इस यात्रा का हाल लिखते हुए बताया है कि "हमारी गाड़ी रास्ते में जिस स्टेशन पर रुकती थी, वहीं पंजाबियों का एक दल करताल आदि लेकर प्लेटफार्म पर उतर पड़ता था और "नहिं रखनी सरकार जालिम, नहीं रखनी सरकार" का गाना सुनाने लगता था। अहमदाबाद कांग्रेस के अध्यक्ष देशबंधु चित्तरंजनदास चुने गये थे, पर सरकार ने उनको पहले ही गिरफ्तार कर लिया। तब हकीम अजमल खाँ को अध्यक्ष पद का कार्य-संचालन करना पड़ा और लोगों में उत्साह का समुद्र उमड़ पड़ा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब सरकार ने अपनी नीति बदल दी और देशव्यापी गिरफ्तारियों तथा दमन का आदेश दे दिया गया। स्वामी जी इसके लिए पहले से ही तैयार हो रहे थे और अपने रहन-सहन तथा खान-पान को इतना सादा बना रहे थे, जिससे जेल की कठिनाइयों का सामना कर सकें। अहमदाबाद से गाजीपुर लौटते ही पुलिस कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में पहुँच गई और स्वामी जी को गिरफ्तारी की सूचना दी। वे इसको स्वतंत्रता देवी का प्रसाद समझकर सहर्ष तैयार हो गये और एक-दो घंटे में ही कोतवाली से जेल में पहुँचा दिये गये। वहाँ से दो-चार दिन बाद बनारस के जिला जेल में भेज दिये गये, जहाँ उस समय बाबा राघवदास, आचार्य कृपलानी, संपूर्णानंद जी आदि नेता भी मौजूद थे। इस प्रकार जिस काशी में विद्याध्ययन और संन्यास लेकर 'धर्म-क्षेत्र' में प्रवेश किया था, उसी काशी से उनका राजनीतिक जीवन भी आरंभ हुआ। इस प्रकार देशोद्धार और जन आंदोलन की सफलता के लिए कष्ट सहन करके, उन्होंने अपना संन्यास वास्तविक अर्थों में सफलता प्राप्त कर दिखाया।

जेल के भीतर भी स्वामी जी निष्क्रिय नहीं रहे। उन्होंने राजनीतिक कैदियों का एक दल बनाया, जिन्हें वे प्रतिदिन गीता पढ़ाया करते थे। उन्होंने स्वयं भी वहाँ गीता का गंभीरतापूर्वक मनन और चिंतन किया और उसके वास्तविक आशय को समझा। बनारस जेल से उनको फैजाबाद और वहाँ से लखनऊ भेज दिया गया। जलवायु के परिवर्तन से वे कुछ बीमार हो गये और इस पर किसी ने उनको जल चिकित्सा की सलाह दी। इसलिए जेल में ही स्नान का 'टब' मँगाकर जल-चिकित्सा का प्रयोग आरंभ किया और चोकरदार रोटी खाने लगे। इससे कुछ समय पश्चात् उनके स्वास्थ्य की पर्याप्त उन्नति हो गई।

लखनऊ जेल में स्वामी जी का परिचय पं० जवाहरलाल नेहरू से हुआ। इस प्रसंग का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने अपने 'जेल-संस्करणों' में लिखा है—"एक दिन उनके साथ दोपहर के पश्चात् बात-चीत होने का निश्चय हुआ। वे दूसरे 'वार्ड' में रहते थे। मैंने कहा कि धूप ज्यादा होती है, आपको आने में कष्ट होगा, मैं ही चला आऊँगा। नेहरू जी ने तुरंत कहा कि 'वकील की हैसियत से मुझे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो खाने के बाद दोपहरी में ही कचहरियों में दौड़ने की आदत है। इसलिए तकलीफ का कोई प्रश्न नहीं, मैं ही आपके पास आऊँगा।' उनकी इस एक ही बात ने मेरे दिल में उनके लिए उच्च स्थान बना दिया। बहुत कम नेता ऐसे सरल स्वभाव के और बाहरी दिखाव से अलग होते हैं। यह हमारी राजनीति की एक बहुत बड़ी कमी है। किसी भी आंदोलन की जान वास्तव में सामान्य कार्यकर्ता ही होते हैं और उनका हृदय ऐसे ही सादगी और आत्मीयता के व्यवहार से जीता जा सकता है। अमीरी की शान-शौकत दिखाना तो किसी सार्वजनिक आंदोलन के लिये प्लेग की तरह घातक सिद्ध होता है।''

एक वर्ष का कारावास दंड पूरा हो जाने पर स्वामी जी छोड़ दिये गये। गाजीपुर स्टेशन पर उनका धूमधाम से से स्वागत किया गया। पर उस समय कांग्रेस के भीतर ही मतभेद पैदा हो गया था। देशबंधु चित्तरंजनदास, पं० मोतीलाल नेहरू कौंसिलों के चुनाव में भाग लेने के पक्षपाती थे और श्री पटेल, राजगोपालाचारी आदि अपरिवर्तनवादी थे। स्वामी जी भी कट्टर गांधीवादी थे और कौंसिल-प्रवेश का नाम सुनकर ही बिगड़ खड़े होते थे। इससे कुछ लोगों के साथ उनकी खट-पट भी होने लग गई। इस पर वे गाजीपुर जिला कांग्रेस कमेटी का कार्यालय गाजीपुर शहर से हटाकर यूसुफपुर में ले गये और वहीं से चर्खा, तकली, खद्दर का खूब प्रचार करने लगे। वे स्वयं चर्खा और तकली चलाते थे। उन्हीं दिनों गोरखपुर में 'संयुक्त प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन' हुआ। उसमें कांग्रेस के दोनों दलों—परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी में मुकाबला हुआ। परिवर्तनवादियों को कांग्रेस से हटाने के लिये वह प्रस्ताव किया गया कि अब से आगे कांग्रेस की सदस्यता की फीस चार आना पैसा के बजाय अपने हाथ से कते सूत के रूप में दी जाए। यह प्रस्ताव स्वामी जी ने ही पेश किया। श्री पुरुषोत्तम दास टंडन इसके समर्थक थे और बाबा राघवदास विरोध कर रहे थे। स्वामी जी का प्रस्ताव पास हो गया, जिससे अपरिवर्तनवादियों में उत्साह की लहर फैल गई और उनका बड़ी धूमधाम से जलूस निकाला गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्कृत और पुरोहिती शिक्षा का प्रचार—

कांग्रेस के आपसी मतभेद और भारत के वायसराय लार्ड रीडिंग की कूटनीति के कारण जब असहयोग का आंदोलन कुछ ढीला पड़ गया, तो स्वामी जी ने भूमिहार ब्राह्मणों में संस्कृत-शिक्षा के प्रचार का कार्य आरंभ किया। इसका एक मुख्य कारण यह था कि स्वामी जी के जेल चले जाने के बाद उनके जातीय-सुधार आंदोलन के विरोधी कितने ही स्वार्थी लोगों ने यह प्रचार शुरू किया कि 'स्वामी जी तो इसी प्रकार एक कार्य को अधूरा छोड़कर दूसरे में जा कूदते हैं और भूमिहार ब्राह्मणों को अपनी पुरानी परिपाटी पर ही चलते रहना उचित है।' कुछ पुरोहितों ने नये सुधारों के विरोध में भूमिहार ब्राह्मणों के यहाँ पुरोहिताई का काम करने से इनकार कर दिया। जब सब बातें स्वामी जी को बतलाई गईं, तो वे 'जालिम सरकार' की तरह स्वार्थी पुरोहितों का मुकाबला करने को तैयार हो गये। उन्होंने बरसात के चार महीनों में सिमरी गाँव में ठहरकर बारह सौ पृष्ठ की एक पुस्तक 'कर्म-कला' लिखकर तैयार की, जिसकी सहायता से कोई भी साधारण शिक्षा प्राप्त, अच्छी तरह धार्मिक संस्कारों को करा सकता था।

फिर वे युक्तप्रांत तथा बिहार के गाँवों में घूमकर भूमिहार ब्राह्मणों की सभाएँ करने लगे और उनसे कहने लगे कि 'यदि आत्म सम्मान की रक्षा चाहते हो, तो अपने धार्मिक संस्कारों में पुरोहित का कार्य स्वयं ही करो। इसके फल से संस्कृत पाठशालाओं और ब्रह्मचर्याश्रमों की स्थापना होने लगी, पर कुछ बड़े जातीय-नेताओं ने इसका विरोध किया, क्योंकि वे सब रूढ़िवादी थे और साधारण जनता में जागृति होने से उनको भय जान पड़ता था। पर स्वामी जी ने अपना कार्य जारी रखा और उनको सफलता मिलती गई।

सन् १६२६ में इस पारस्परिक मतभेद ने अधिक उग्र रूप धारण कर लिया और धनी भूमिहारों की पार्टी के नेता सर गणेशदत्त सिंह ने एक मीटिंग में स्वामी जी से कहा कि "आप समाज को चौपट कर रहे हैं। असहयोग में लड़कों को बहकाकर छुड़ाया तथा युवकों और गृहस्थों को जेल भिजवाया। अब जाति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वालों को भीख माँगने वाला पुरोहिताई का कार्य सिखाकर रहे-सहे को भी चौपट करना चाहते हैं। भूमिहार ब्राह्मण का बेटा कथा बाँचकर पेट भरे, तो यह शर्म की, डूब मरने की बात होगी।" इस पर स्वामी जी ने आवेश में आकर कहा कि "कथा बाँचने अथवा धर्म संस्कार कराने में ब्राह्मण के लिये कभी शर्म की बात होती ही नहीं। पर जो ब्राह्मणत्व दावा करके वकील का चोला पहनकर अदालतों में जाते हैं और गंगा, तुलसी उठाकर झूठी कसम खिलाते हैं, वास्तव में डूब मरने की बात तो उनके लिये है।" यह कहकर स्वामी जी उठकर चले आये और सर गणेशदत्त, जो वकील का पेशा करते थे, इसके लिये सदैव उनके विरोधी बने रहे।

सीतारामाश्रम की स्थापना—

अब स्वामी जी का संपर्क जनता से निरंतर बढ़ता जाता था और 'बड़े लोग' कहलाने वालों की स्वार्थपरता और अन्याय परायणता उन पर प्रकट होती जाती थी। भूमिहार ब्राह्मणों की जातीय सभा बनाकर उनके सुधार का आंदोलन करते समय उस जाति के कुछ संपन्न और प्रसिद्ध लोगों से उनका संपर्क हो गया था और वे जाति के नाम पर आंदोलन में कुछ सहायता भी देते थे। वे लोग अधिकांश में बड़े या छोटे जमींदार थे। इसलिये जब स्वामी जी कांग्रेस में शामिल होकर जन-जागरण का काम करने लगे, तो उनमें से अधिकांश निजी स्वार्थ के कारण और सरकार के भय से भी उनके विरोधी बन गये। सर गणेशदत्त सिंह से उनका संघर्ष कई वर्ष तक चलता रहा और परिणामस्वरूप जिस 'भूमिहार ब्राह्मण महासभा' की स्थापना स्वामी जी ने स्वयं कराई थी, उसे स्वयं ही तोड़ भी दिया। इस बीच में उनको बराबर यही अनुभव हो रहा था कि पुराने ढंग की सभाओं से सामान्य लोगों का हित तो बहुत कम होता है और प्रायः वे बड़े लोगों की नामवरी तथा प्रभाव बढ़ाने का साधन बन जाती है।

जब स्वामी जी ने संस्कृत पाठशाला और आश्रम स्थापित करने का कार्यारंभ किया, तो उनको पटना से थोड़ी दूर बिहरा में एक अच्छा स्थान प्राप्त हो गया। वहाँ सीताराम दास नामक महंत रहते थे, उन्होंने स्वामी जी के कार्य की महत्ता समझकर अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समस्त जायदाद इसी के लिये दे दी और स्वामी जी ने वहाँ श्री 'सीतारामाश्रम' के नाम से एक आश्रम स्थापित कर दिया। इसका एक उद्देश्य जन आंदोलन में भाग लेने वाले सुयोग्य और सुदृढ़ कार्यकर्ता तैयार करना भी था। इसलिये आश्रम के नियम ब्रह्मचर्य पालन और खान-पान संबंधी संयम के संबंध में बहुत कड़े रखे गये थे। उसमें वे ही लोग टिक सकते थे, जो वास्तव में स्वार्थ त्याग कर देश और समाज की सच्चे हृदय से सेवा करना चाहते हों।

आरंभ में तो इसे भी एक जातीय संस्था मानकर कई भूमिहार जमींदारों ने सहायता दी, पर जब स्वामी जी की कार्य प्रणाली और उनका उद्देश्य उनको मालूम हो गया, तो उन्होंने चंदा देना ही बंद नहीं किया, वरन् अन्य प्रकार से भी हानि पहुँचाने की चेष्टा करने लगे। इस संबंध में एक बार स्वामी जी ने लिखा था—

"जमींदारों ने सिर्फ चंदा देना ही बंद नहीं कर दिया है, वरन् वे इस आश्रम के जानी दुश्मन बन गये हैं। यह इसलिये हुआ कि उनके जुल्मों से कराहने वाले ग्वाले और दूसरे किसान मेरे पास आये, तो मैंने उनका पक्ष लेकर जमींदारों का विरोध किया। आज कोई भी आस-पास के गाँवों में जाँच कर ले कि पीड़ित लोगों का मेरे और आश्रम के ऊपर पूरा विश्वास है। वे लोग चाहे जिस जाति या धर्म के क्यों न हों, पर आश्रम तो क्रांति का एक प्रतीक है। जब जमींदारों ने किसान-आंदोलन से नाराज होकर चंदा देना बंद किया और दूसरों पर भी ने देने का प्रभाव डाला, जिससे आश्रम टूट जाए, तो मैंने भी निश्चय किया कि जमींदारों से चंदा लेने किसी को न भेजूँगा और न आश्रम को टूटने दूँगा। इस प्रकार मैंने जमींदारों का मद चूर किया और उनकी कभी परवाह नहीं की।"

जमींदारों के इस व्यवहार से यह भी प्रकट हो गया कि वे जातीय संस्थाओं में जो चंदा देते हैं, उसमें उनका स्वार्थ होता है। धनी लोग ऐसी जातीय और धार्मिक सभाओं को कुछ रुपया देकर अपने हाथ में रखते हैं और समय-समय पर उनमें राजभक्ति के प्रस्ताव पास कराके, सरकारी अफसरों का स्वागत-सम्मान कराके अपना प्रभाव बढ़ाते रहते हैं और फिर इसी के जोर पर आर्थिक लाभ भी उठाते हैं। खासकर चुनाव के अवसरों पर तो वे इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सभाओं को अपने प्रचार का एक बड़ा साधन ही बना लेते हैं। स्वामी जी इन तथाकथित 'बड़े लोगों' की सब चालों को समझते थे और उन्होंने "किसानों को फँसाने की तैयारियाँ" नामक पुस्तक में इन स्वार्थियों की करतूतों का अच्छी तरह भंडाफोड़ किया था। उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि जमींदार या बड़े व्यवसायी लोग जो कुछ चंदा जातीय कार्यों या धर्म कार्यों में देते हैं, उसका उद्देश्य परलोक-सुधार या परोपकार नहीं होता, वरन् अपनी जमींदारी या व्यापार को दृढ़ करना ही होता है।

किसान-आंदोलन का श्रीगणेश—

सन् १९२६-२७ में स्वामी जी ने जन-आंदोलन के लिए 'लोक-संग्रह' नाम का साप्ताहिक पत्र पटना से निकाला। यह बड़ा जोरदार और निर्भय पत्र था और गरीब किसानों तथा मजदूरों का सदैव मार्गदर्शन करता रहता था। इस पत्र में विज्ञापन नहीं छापे जाते थे, तो भी इसका इतना प्रचार था कि इसका खर्च अधिकांश में निकल जाता था। इसने जन-जागृति में अच्छा काम किया और किसानों में अपने पैरों पर खड़े होकर सुदृढ़ संगठन बनाने की भावना उत्पन्न की। पर पटना से दूर बिहिटा में रहने के कारण उन्हें इसकी देखभाल करने नित्य पटना आना पड़ता था। इससे अन्य प्रचार संबंधी कार्यों में बाधा पड़ती थी। एक वर्ष बाद उन्होंने इसे स्थगित करके प्रेस अपने एक सहकारी के हाथ बेच दिया।

सन् १९२७ में ही किसान सभा का जन्म हुआ। आरंभ में इसका नाम "पश्चिम पटना किसान सभा" रखा गया। बिहिटा, जहाँ स्वामी जी का "सीतारामाश्रम" था। वह पटना से पश्चिम की तरफ था। इससे कुछ मील के फासले पर 'मसौढ़ा' नामक बड़ी जमींदारी थी। इसके जमींदार बड़े अन्यायी थे और अपने यहाँ रहने वाले किसानों को बहुत कष्ट देते थे। आरंभ में स्वामी जी की योजना यह थी कि 'किसान-सभा' में जमींदारों को भी शामिल किया जाय और दोनों मिलकर गाँवों की उन्नति का प्रयत्न करें। वे आपस में लड़ाई-झगड़ा उत्पन्न करने के पक्ष में न थे, वरन् किसान-जमींदार, पूँजीपति-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मजदूर, अमीर-गरीब सबके हितों का सामंजस्य करके विदेशियों के मुकाबले में देश को संगठित और सुदृढ़ बनाने के इच्छुक थे।

पर जमींदार तो परंपरागत स्वार्थी बन गये थे, उनकी दाढ़ों में गरीब किसानों का खून लग चुका था। वे सहज में अपनी लूट-मार की प्रवृत्ति को कैसे छोड़ सकते थे ? उन्होंने स्वामी जी की बातों पर—सद्भावनाओं पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। परिणाम यह निकला कि स्वामी जी ने जो कार्य सुधार की मनोवृत्ति से आरंभ किया था, वह अंत में क्रांतिकारी मार्ग का अनुयायी बन गया। उसने केवल पटना जिला के जमींदारों के होश ही ठिकाने नहीं लगा दिये, वरन् "अखिल भारतीय किसान सभा" का रूप धारण कर देश भर में जमींदारी-प्रथा की जड़ हिला दी। स्वराज होने पर जो 'जमींदारी उन्मूलन' कानून बना, उसका बहुत कुछ श्रेय स्वामी जी के 'किसान आंदोलन' और 'किसान-सभा' को था।

जातीय-सभा में संघर्ष—

सन् १९२९ में उन्होंने सुना कि बिहार सरकार ने गया के जिला बोर्ड को तोड़ दिया है और उसके कांग्रेसी चेयरमैन बाबू अनुग्रह नारायणसिंह को हटा दिया है। स्वामी जी को इस बात पर कुछ आश्चर्य हुआ और ठीक बात का पता लगाने को सर गणेशदत्त सिंह के बंगले पर पहुँचे, जो इस विभाग के मंत्री थे। सर गणेश ने कुछ कारण तो बताया, पर स्वामी जी को उससे संतोष नहीं हुआ और उन्होंने समझ लिया कि सरकार के इशारे पर सर गणेश ने कांग्रेस पर आक्रमण किया है। उन्होंने 'सर्च लाइट' और अन्य पत्रों में एक लंबा वक्तव्य छपाकर इस देश-द्रोह का रहस्य उद्घाटन किया। इस समय से उनकी सर गणेश से और भी तनातनी हो गई। स्वामी जी कहते थे कि "सर गणेश ने सरकार की खूब भक्ति की है। उनके जैसा सरकारी अधिकारियों का अतिथि-सत्कार करने वाला कोई नहीं है। वे अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने का ध्यान करते हैं और समझदार भी खूब हैं। मगर सरकार परस्ती के कारण उनके इन सब गुणों पर पानी फिर गया।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब कुछ महीने बाद स्वामी जी ने सुना कि मुंगेर मे 'भूमिहार ब्राह्मण सभा' का अधिवेशन हो रहा है और सर गणेश उसके सभापति हैं, तो उनको यह बहुत बुरा लगा और कहने लगे—"क्या समाज में और कोई पढ़ा-लिखा आदमी नहीं है ? जो इस काम को सँभाल सके। क्या समाज उनके हाथ बिक गया है ? फिर कांग्रेस के समय जातीय-सभा की आवश्यकता ही क्या है ? इस प्रकार की सभायें तो अब सरकार की पिट्ठू बनकर राष्ट्रीय आंदोलन का विरोध करती हैं। इससे भूमिहार जाति की बदनामी है कि लोग ऊपर से तो राष्ट्रवादी नेता बनते हैं और भीतर ही भीतर जी हजूर बनकर सरकार का समर्थन करने वाली सभाओं में भाग लेते हैं। कुछ भी हो मैं सर गणेश का विरोध करूँगा और उनकी इस चाल को कभी न चलने दूँगा। देखना है कि अगली बार वे कैसे इस प्रकार चुनाव जीतकर 'मिनिस्टर' बन जाते हैं ?'

बस स्वामी जी बिना बुलाये मुंगेर पहुँच गये और सर गणेश के विरुद्ध धुँआधार प्रचार करने लगे। इससे बड़ी सनसनी फैल गई और भूमिहार—समाज के बड़े-बड़े नेता, जिनमें कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता बाबू श्रीकृष्णसिंह भी थे, उनको समझाने आये। स्वामी जी ने उनसे कहा कि आप लोगों ने तो मुझे एकबार कांग्रेस का विरोधी और सर गणेश का पक्षपाती कहकर बदनाम किया था। अब आप स्वयं उनकी सहायता को क्यों तैयार हुए हैं ? मैं तो उनका जी-जान से विरोध करूँगा और देखूँगा कि वे अब कैसे 'मिनिस्टर' बनकर सरकार के कृपापात्र बनते हैं ?"

इसके पश्चात् सगाज के अन्य प्रभावशाली व्यक्ति आये और उन्होंने स्वामी जी को समझाया। अंत में स्वामी जी को कहना पड़ा कि, "अच्छा ! आप लोग सभा करें, मैं उसमें नहीं आऊँगा। यदि आप लोग चाहते हैं कि वही सभापति हों, तो आप ही सभा का काम सँभालें।" स्वामी जी सभा में नहीं गये। पर जब कार्यवाही आरंभ हुई, तो किसी ने सभापति से पूछा कि, सभा के जन्मदाता स्वामी सहजानंद जी मुंगेर में होते हुए भी इस अधिवेशन में क्यों नहीं आये ? सर गणेश ने नाराज होकर उत्तर दिया—"स्वामी जी के बिना सभा का काम रुक नहीं सकता।" इस पर हल्ला-गुल्ला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मच गया और चारों तरफ से आवाजें आने लगीं—"स्वामी जी को बुलाओ" "स्वामी जी को बुलाओ।" स्वामी जी के गुरुभाई वृद्ध स्वामी परमानंद जी ने खड़े होकर कहा—"स्वामी जी ने समाज को जगाया—आपको ऊँचा उठाया और आप ही कहते हैं कि उनके बिना क्या काम रुक जायेगा ?" वे क्रोध में अपना दंड लेकर सभापति की ओर बढ़े। फिर तो ऐसी भड़भड़ी मची कि शांति भंग होने का डर होने लगा और लोग—"पुलिस-पुलिस" चिल्लाने लगे। किसी प्रकार लोग सर गणेश को घेरकर सभा से बाहर लाये और निवास स्थान तक पहुँचाया।

कई लोग दौड़कर स्वामी जी के पास पहुँचे और कहने लगे—"आप चलिये ! वहाँ तो अनर्थ हो रहा है। शायद सर गणेश को किसी ने पीट दिया हो !" यह सुनकर स्वामी जी तुरंत वहाँ पहुँचे। पर तब तक सर गणेश वहाँ से चले गये थे। स्वामी जी ने सब लोगों को शांत किया और सभा को सदैव के लिए भंग करने की घोषणा कर दी। इसके पश्चात् सभा कभी अच्छी तरह नहीं चली और स्वामी जी ने तो उससे पूर्णतया संबंध विच्छेद कर लिया। वे अब केवल कांग्रेस में काम करने लगे और 'किसान संगठन' को अपना प्रधान कार्यक्रम बनाया। दो नावों पर चढ़ना, उनको पसंद न आया और इसलिये उन्होंने जातीय-सभाओं के उस मार्ग को त्याग दिया, जिसमें सब तरह के विचारों के लोग भाग लेते हैं और अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये राष्ट्रीय आंदोलन के विपरीत आचरण करने में भी संकोच नहीं करते।

अब स्वामी जी ने 'किसान-सभा' का बाकायदा संगठन किया और कांग्रेस के नेताओं ने भी उसमें पूरी तरह से भाग लिया। स्वयं बाबू राजेंद्र प्रसाद इसमें शामिल थे और श्री कृष्णसिंह जनरल सेक्रेटेरी नियत किये गये थे। स्वामी जी स्थानापन्न सभापति का कार्य करने लगे। वे प्रांत भर में घूमने लगे। सोनपुर के मेले में एक बहुत बड़ा सम्मेलन भी किया गया। इसी बीच सरदार बल्लभ भाई पटेल का दौरा हुआ। उन्होंने भी 'किसान-सभा' का जोरों से समर्थन किया। इस प्रकार सभा का काम बहुत आगे बढ़ गया और किसानों की जागृति से जमींदार भयभीत हो उठे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूसरा कारावास—

इसके पश्चात् ही सन् १६३० का नमक-सत्याग्रह आरंभ हो गया। २६ जनवरी को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। ६ अप्रेल से १३ अप्रेल तक सत्याग्रह का विशेष कार्यक्रम रखा गया था। उसी समय गांधी जी डाँडी पहुँचने वाले थे और देश भर में नमक कानून तोड़ा जाने वाला था। स्वामी जी प्रांत भर का दौरा करके नमक-सत्याग्रह का प्रचार करने लगे और अमहरा में स्वयं नमक बनाकर गिरफ्तार हो गये। अदालत में मुकदमा चलने पर उनको ६ मास की कड़ी कैद का दंड दिया गया।

स्वामी जी को पटना की जेल में रखा गया। अप्रेल, मई के महीनों में पटना में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, साथ ही मच्छरों की अधिकता होती है। इससे उनको काफी कष्ट होता था, तो भी उन्होंने अपने लिए किसी प्रकार की सुविधा की माँग नहीं की। इन मच्छरों का वर्णन साहित्यिक शैली में करते हुए स्वामी जी ने लिखा था—"पटना के मच्छर भी पुराने मुछंदर हैं ! ये जाड़े में मरते नहीं, इसलिए अपने काम में काफी अनुभव रखते हैं। जबकि जाड़े की ऋतु में अन्य स्थानों में मच्छर या तो बिल्कुल नहीं होते या नाम मात्र को होते हैं, तब पटना में सबसे ज्यादा होते हैं और जब बरसात में सब जगह उनकी महती सेना अजेय बनकर खड़ी हो जाती है, तब पटना में सबसे कम पाये जाते हैं। दुनिया में सब जगह गर्मियों की अपेक्षा जाड़ों में मच्छरों की संख्या घट जाती है, पर पटना में जाड़ों में गर्मी से भी अधिक मच्छर पाये जाते हैं। गया की भी ऐसी ही दशा है। इसका कारण यह है कि इन नगरों की नालियाँ जाड़े में गंदे पानी से भरी रहती हैं, इसी से खूब मच्छर पैदा होते हैं। गर्मियों में तेज धूप पड़ने से छोटी नालियाँ प्रायः सूख जाती हैं और बड़ी नालियों में भी थोड़ा ही पानी रह जाता है, इससे मच्छर भी अपेक्षाकृत कम हो जाते हैं।"

जेलखाने में बैठक के भीतर ही स्वामी जी खूब टहलते थे। इससे व्यायाम हो जाता था और थकावट आकर नींद भी अच्छी तरह आ जाती थी। इस बार जेलखाने में खाने-पीने की समस्या भी आई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और पहले की तरह विशेष सुविधायें प्राप्त नहीं हुईं। फिर भी अनुशासन को भंग करना उचित नहीं मानते थे, इसलिए जेल की रोटी ही खाने लगे। अभी तक वे नल का पानी नहीं पीते थे, पर पटना जेल में उन्होंने यह नियम भी छोड़ दिया। पीने का पानी एक सुराही में अलग रख लेते और उसी से काम चलाते थे। उनका छुआछूत का सिद्धांत बहुत कुछ सफाई पर आधारित था। वे जिस प्रदेश (पूर्वीय उत्तर प्रांत) के रहने वाले थे, वहाँ सफाई और शुद्धता पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है। खासकर बर्तनों को खूब माँजकर हमेशा चमचमाता रखा जाता है। पर बिहार में उन्होंने उलटी दशा देखी। वहाँ कुएँ पर रखा डोल कभी नहीं माँजा जाता था और सभी लोग उसी से पानी पीते रहते थे। यहाँ तक हाथ से निकालकर चुल्लू से भी पी लेते थे। बिहार के 'मनसिया' (ब्राह्मण रसोईघर) भोजन बनाकर स्नान करते हैं, पर उत्तर प्रदेश में पहले स्नान करके भोजन बनाया जाता है। बिहार में साधुओं के वस्त्र भी हमेशा मैले, गंदे रहते है। इस सबसे स्वामी जी घबड़ाते थे और प्रायः अपने सहकर्मियों से इसकी चर्चा करके सफाई रखने का उपदेश दिया करते थे।

पटना की जेल में एक-डेढ़ महीना रहने के पश्चात् उनको हजारीबाग की सेंट्रल जेल में भेज दिया गया। वहाँ वे और भी नियमपूर्वक रहते थे और गीता का अध्ययन करके "गीता हृदय" भाष्य लिखने की तैयारी करते रहते थे। वे कहते थे कि मुझे जेल की दो बातें बहुत पसंद हैं—सफाई और टाइम-टेबिल के अनुसार हर एक काम ठीक समय पर करते रहना। वे स्वयं भी समय की पाबंदी के कायल थे और सब जगह इस नियम का प्रचार करने की चेष्टा करते रहते थे। वैसे जेल को लोग 'यमराज का घर' कहते हैं, पर स्वामी जी वहाँ से भी जो कुछ अच्छी बातें हों, उनको सीख लेने पर जोर देते थे।

नकली किसान सभा—

जेल से छूटने पर स्वामी जी बिहिटा आये। स्टेशन पर उनका बड़े उत्साह से स्वागत हुआ और उनको फूल-मालाओं से लाद दिया गया। जेल में उनका स्वास्थ्य कुछ निर्बल हो गया था,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसलिए एकाध महीने आश्रम में रहकर उसका सुधार किया। इसी अवसर पर उनको 'युनाइटेड पार्टी' और नकली किसान-सभा का समाचार मिला। बिहार सरकार ने जब देखा कि इस समय कांग्रेस आंदोलन में फँसी है, उसके सभी नेता जेलों में बंद हैं, तो उसने अपने दोस्त जमींदारों को पीठ ठोककर खड़ा किया कि यही मौका है कि वे प्रांत में अपना नेतृत्व और धाक जमा लें।

इसलिये एक संयुक्त दल (यूनाइटेड पार्टी) का निर्माण किया गया और यह डंका पीटा गया कि इसमें जमींदार, किसान, मजदूर सभी शामिल होंगे। काश्तकारी-कानून में संशोधन किया जायेगा। किसानों को अपनी जमीन के पेड़ों पर हक मिलेगा, वे जमीन की खरीद-बिक्री स्वतंत्रतापूर्वक कर सकेंगे। ईंट, खपरैल, कुँआ, तालाब और पक्का मकान अपनी जमीन में बे-रोकटोक बना सकेंगे आदि। सरकार ने यह भी देखा कि किसान-सभा के प्रमुख संचालक अस्वस्थ होने के कारण इस समय निष्क्रिय हो रहे हैं, इसलिये उन्होंने बाबू गुरुसहायलाल और बाबू शिवशंकर झा जैसे जमींदारों को प्रेरित करके एक किसान-सभा स्थापित करा दी। इसकी तरफ से बड़ी सार्वजनिक सभा का आयोजन १३ फरवरी १९३३ को पटना में होने वाला था, स्वामी जी को जान-बूझकर उससे अलग रखा गया था। पर उनको अपने कुछ साथियों से इसका सारा भेद मालूम हो गया और उन्होंने मौके पर पहुँचकर उस नकली आयोजन को खंड-खंड कर दिया और फिर से असली किसान सभा का झंडा लहरा दिया।

स्वामी जी ने प्रांत भर का तूफानी दौरा करके नकली किसान सभा का भंडाफोड़ किया। उसके सर्वोच्च नेता सूर्यपुरा के राजा तथा बाबू देवकीनंदन सिन्हा जैसे बड़े जमींदारों का असली उद्देश्य भी लोगों को समझाया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार बरगद के विशाल पेड़ के नीचे दूसरा कोई पेड़-पौधा पनप नहीं सकता, उसी प्रकार जमींदारों की छाया में किसानों का कोई संगठन उन्नति नहीं कर सकता और न उसका स्थायी हित हो सकता है। उस समय की परिस्थिति का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने एक बार बतलाया था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"उस अवसर पर राजा सूर्यपुरा से भेंट हाने पर बहुत-सी बातें हुई। वे बड़े चतुर और ब्यवहार कुशल आदमी हैं। वे चाहते थे कि बाबू गुरुसहायलाल की तरह मुझे भी अपने चंगुल में फॅसा ले। संभवतः वे ही 'युनाइटेड पार्टी' के मंत्री थे। उस पार्टी और जमींदार सभा' में कोई फर्क न था। उस पार्टी में कुछ ऐसे लोग थे, जो किसानों का प्रतिनिधित्व करते थे। इसी आधार पर किसानों और जमींदारों के समझौते का एक बिल प्रांतीय कौंसिल में पेश किया गया। उस बिल के पास होने से किसानों का कोई लाभ न था। इसलिए मैंने यह प्रस्ताव किया कि जमींदार और किसानों की समस्या का निर्णय एक पंचायत द्वारा किया जाए, जिसमें दोनों पक्षों के प्रतिनिधि हों, पर राजा साहब ने उसको नहीं माना, तब यह कार्य किसान-सभा की तरफ से आरंभ किया गया और एक पंच-कमेटी नियत की गई, जिसमें पं० यमुना काम्मों, पं० यदुनंदन शर्मा, बाबू बदरीनारायण सिंह आदि थे। इस कमेटी के सदस्यों ने गया जिले को छान डाला। इसमें कितने ही जमींदारों के कर्मचारियों के जुल्मों का हाल प्रकाश में आया।

कुछ जमींदारों ने अपना प्रतिनिधि स्वामी जी के पास समझौते के लिए भेजा, पर उनका असली उद्देश्य किसानों के साथ न्याय करने के बजाय स्वामी जी को बहकाकर या कुछ लालच दिखाकर अपना मतलब सिद्ध करना था। इससे स्वामी जी इन लोगों के असली रूप को समझ गये और उन्होंने पंच-कमेटी की रिपोर्ट को "गया के किसानों की करुण कहानी" के नाम से छपवाकर प्रकाशित कर दिया। उसके आधार पर स्वामी जी ने ऐसा जोरदार आंदोलन चलाया कि जमींदार और सरकार दोनों घबड़ा उठे। जगह-जगह सभायें करके जमींदारों के अत्याचारों का पर्दाफाश किया जाने लगा। उन्होंने कई बार इन सभाओं को रोकने, इनमें बाधा डालने का प्रयत्न किया, पर किसानों के उत्साह और उठ खड़े होने के कारण उनकी एक भी चाल सफल न हो सकी! स्वामी जी ने बड़े-बड़े जमींदारों द्वारा दिखाये गये किसी प्रलोभन में न आकर यह दिखला दिया कि जन-आंदोलन में भाग लेने वालों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को पहले स्वयं सच्चाई और निःस्वार्थता पर दृढ़ रहना चाहिए, तभी वे जनता का कुछ वास्तविक उपकार कर सकते हैं।

कांग्रेस से मतभेद—

अब कांग्रेस और किसान सभा के बीच में भी कुछ मतभेद प्रकट होने लगा। कांग्रेस के अनेक नेता स्वयं जमींदार थे और बहुतों का जमींदारों से घनिष्ठ संबंध था। बिहार के कांग्रेसी डिक्टेटर बाबू रात्यनारायण सिंह ने एक नोटिस प्रकाशित कराया कि कोई कांग्रेसी, कांग्रेस के सिवाय और किसी आंदोलन में भाग न ले, क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस की स्थिति कमजोर होगी। कांग्रेस का ऐसा रुख देखकर जमींदारों को आशा होने लगी कि उनकी तरफ से जो "टेनैंसी बिल" कौंसिल में पेश किया गया, वह शायद पास हो जायगा। इस परिस्थिति को देखकर स्वामी जी ने अपना आंदोलन और आगे बढ़ा दिया और प्रांत भर में किसान-सभाओं की धूम मच गई।

सन् १९३४ में बिहार में भयंकर भूकंप हुआ। हजारों व्यक्ति मर गये और करोड़ों की संपत्ति नष्ट हो गई। गरीब किसान तो पहले से ही अभावग्रस्त दशा में जीवन व्यतीत करते थे, भूकंप उनको और भी मार गया। इस दैवी प्रकोप ने कुछ समय के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों और नेताओं के मतभेद को कुछ देर के लिए दबा दिया और सब लोग भूकंप-पीड़ितों की सहायता के लिए उद्योग करने लगे, योजनायें बनाने लगे। पर ऐसे अवसर पर भी बड़े लोग अपने स्वार्थ की बात को निगाह से ओझल नहीं होने देते और सच पूछा जाय तो ऐसी अर्थ-पिशाच जैसी मनोवृत्ति के कारण ही वे लखपति-करोड़पति बन जाया करते हैं। इस संबंध में एक घटना इस प्रकार बतलाई गई—

"भूकंप के बाद जब पटना की पीली कोठी में रिलीफ कमेटी (सहायता समिति) का दफ्तर खोला गया, तो एकबार दरभंगा महाराज ने बाबू राजेंद्रप्रसाद से बातें करके यह चेष्टा की कि कांग्रेस से समझौता करके चुपचाप 'टेनैंसी बिल' का प्रश्न तय कर लें और किसान सभा ताकती रह जाय। पर राजेंद्र बाबू ने महाराजा तथा अन्य जमींदारों से कहा कि मैं किसान सभा के नेताओं से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बात करके ही आपको कोई जवाब दे सकता हूँ कि क्या करना उचित होगा ?'' उन्होंने लोगों से इस विषय पर बात-चीत की और हमारा दृष्टिकोण जानकर इस झमेले में पड़ने से इनकार करते हुए महाराज दरभंगा को पत्र द्वारा अस्वीकृति की सूचना दे दी। उसमें अन्य बातों के साथ उन्होंने यह भी लिखा था—"असल कठिनाई इस झमेले को सुलझाने में यह है कि आप लोग बिहार प्रांतीय किसान-सभा के संचालकों को, किसानों का प्रतिनिधित्व करने वाले मानने को तैयार नहीं है।' यह पत्र उसी समय अखबारों में छप गया था। इस प्रकार राजेंद्र बाबू द्वारा किसान सभा के विषय में यह सम्मति प्रकट करना, हमारी बहुत बड़ी नैतिक जीत थी।''

उत्तर बिहार की भूकंप के कारण अवर्णनीय दुर्दशा हो रही थी। स्वामी जी घूम-घूम कर चंदा इकट्ठा करके गरीबों की सहायता करते थे। उस समय भी उन्होंने देखा कि सर्वथा साधनहीन किसान को भी जमींदार लोग सताने में नहीं हिचकिचाते। भूकंप के कारण वे किसान दाने-दाने को मुँहताज थे, उनके घर और झोपड़े गिर गये थे, घर में जो थोड़ा अन्न था, वह जमीन की दरारों में धँस गया था, फिर भी जमींदार लोग निर्दयतापूर्वक उनको लगान देने के लिए विवश कर रहे थे और न देने पर उनका बचा-खुचा थाली, लोटा, गाय, बकरी आदि छीन रहे थे। स्वामी जी ने एक जमींदार का निकाला हुआ ऐसा हुक्मनामा अखबारों में छपा दिया और यह भी कहा कि रिलीफ कमेटी' झोपड़ा बनाने के लिए जो बाँस, लकड़ी आदि की चीजें सहायता के रूप में किसानों को दे रही हैं, उन्हें भी जमींदारों के कर्मचारी नहीं लेने देते। इससे सर्वत्र बहुत हल्ला-गुल्ला मचा और ऐसे जमींदारों की निंदा की गई।

अखिल भारतीय किसान-सभा की स्थापना—

इसके पश्चात् स्वामी जी किसान-सभा का प्रचार कार्य बढ़ाने में ही अपनी पूरी शक्ति लगाने लगे। उनको अनुभव हो रहा था कि कांग्रेस पूरी तरह से किसानों का साथ नहीं दे सकती, क्योंकि उसमें सब श्रेणियों के लोग शामिल हैं और उसे आर्थिक सहायता विशेष रूप से बड़े लोगों से ही मिलती है। इसलिये वह खुलकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जमींदारों का विरोध नहीं कर सकती। इस कारण किसानों को अपने पैरों पर ही खड़ा होना पड़ेगा। फिर भी उस समय तक स्वामी जी जमींदारी प्रथा के पूर्ण उन्मूलन के बजाय उसके सुधार की ही माँग करते थे। जब गया में किसान-सभा की एक बैठक में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने सभापति की हैसियत से जमींदार के उन्मूलन का समर्थन किया, तब भी स्वामी जी ने उसे तत्कालीन परिस्थिति में असामाजिक बतलाया।

पर इसके कुछ ही समय बाद बंबई कांग्रेस के अधिवेशन में परिस्थिति बदल गई। उस अधिवेशन में कौंसिल में प्रवेश के प्रश्न पर विचार किया गया। स्वामी जी ने उसका घोर विरोध किया, पर गांधी जी के स्वीकार कर लेने से वह प्रस्ताव पास हो गया। स्वामी जी ने समझ लिया कि अब बिहार के जमींदार कांग्रेस में सम्मिलित होकर शासन-सत्ता को अपने हाथ में ले लेंगे और किसानों का अधिकाधिक शोषण करेंगे। इस संभावना को देखकर वे जमींदारी उन्मूलन के पक्ष में हो गये। अभी तक स्वामी जी ने जमींदारों को खूब समझाया-बुझाया था, बार-बार उनको सँभल जाने का मौका दिया था, सात वर्ष तक वे जमींदारों और किसानों के बीच सद्भावपूर्वक समझौते की चेष्टा करते रहे, पर जब उन्होंने देखा कि कुत्ते की पूँछ सीधी न हो सकने की तरह जमींदार सभी किसानों के साथ न्याय करने को तैयार न होंगे, तो इस प्रथा को जड़मूल से नष्ट करने को बद्धपरिकर हो गये। एक लेखक के मतानुसार उसके बाद उन्होंने किसानों में जो प्रचार कार्य आरंभ किया। उसमें वे आग उगलते थे और कभी मेघ-गर्जन का दृश्य उपस्थिति करते थे। कभी शोक का भाव दिखलाकर श्रोताओं को द्रवीभूत कर देते थे। भूकंप के अवसर पर जमींदारों ने जैसी हृदयहीनता का परिचय दिया था, उसे याद करके स्वामी जी की शांति सदा के लिये किसी दूरवर्ती स्थान को चली गई थी !

अब वे कहने लगे थे कि जमींदार नाम की चीज ही बुरी है। वह रहने लायक नहीं। उनकी धारणा हो गई कि यदि किसी भी तरह का भी जमींदार हो, तो वह भी खतरनाक होगा। अब वे किसानों में यही भावना भरने लगे कि यदि वे अपना उद्धार चाहते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं तो जमींदारी-प्रथा का अंत किये जाने की आवाज बुलंद करें। सन् १६३५ में कांग्रेस के उग्रदल के अनेक नेताओं ने मेरठ में एकत्रित होकर आगे के लिये जो राजनैतिक कार्यक्रम बनाया, उसमें एक 'अखिल भारतीय किसान सभा' के संगठन का निश्चय भी किया गया। इसके लिए जो संगठन समिति बनी, उसके मंत्री स्वामी सहजानंद जी ही बनाये गए। श्री रंगा और श्री मोहन लाल गौतम भी उसमें शामिल किये गए। इस संस्था का निर्माण हो जाने पर उन्होंने भारत के विभिन्न प्रांतों का दौरा करके किसान संगठन का संदेश सुनाया। उन्होंने सभा का केंद्र बिहिटा के सीताराम आश्रम में ही रखा। कार्यालय का काम चलाने के लिए वे किसानों से ही थोड़ा-थोड़ा चंदा एकत्रित कर लेते थे, पर जमींदारों और पूँजीपतियों से कभी चंदे की चर्चा भी नहीं करते थे। वे कहते थे—

"मालदार और जमीन-जायदाद वाले पूँजीपति बड़ी धूर्तता से जनता का शोषण करते हैं। बड़े-बड़े नेता, महात्मा और धर्मात्मा उनके शिकंजे में फँसकर उनके शोषण में मदद करते हैं। वे पूँजीपतियों से दान दिलवाकर समझते हैं कि हम पूँजीपतियों का उपयोग जनता के लाभार्थ कर रहे हैं, किंतु वास्तव में पूँजीपति ही उनका प्रयोग अपने लाभ तथा गरीबों के शोषण के लिए करते हैं। मैंने अनुभव द्वारा समझ लिया था कि वे नेताओं को किस तरह ठगते हैं ? अगर मैं जरा-सा ढीला पड़ता, तो बिहिटा की चीनी मिल से दो-चार सौ रुपये मासिक और कुछ हजार एक मुश्त लेकर आश्रम में मकान बनवा देता और कई पंडित रखकर लड़कों को पढ़वाता, सुंदर पुस्तकालय बनवा देता। फिर तो चारों ओर यह शोर हो जाता कि स्वामी जी बड़ा काम कर रहे हैं। पर फल यह होता कि मिल वाले साल में किसानों से लाखों रुपया लूट लेते और उसी खून में से दो-चार बूँद हमको भी देते रहते। यही बात सब जगह होती है। जो नेता या महात्मा धनियों और पूँजीपतियों से पैसे लेकर सार्वजनिक सेवा का ढोंग रचते हैं, वह गरीबों का खून इसी प्रकार लुटवाकर उसी में से दो-चार बूँदें पा लेते हैं। यह ध्रुव सत्य है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना और किसान आंदोलन—

सन् १९३६ में कांग्रेस के फैजपुर अधिवेशन में स्वामी जी ने इस बात के लिए बहुत कोशिश की कि कांग्रेस-कार्यक्रम में किसानों के हित के प्रस्तावों को विशेष रूप से रखा जाय, पर बिहार के नेता इस पर नाराज होने लगे। पर उस अधिवेशन में अध्यक्ष पं० जवाहर लाल नेहरू ने स्वामी जी को धन्यवाद देकर आश्वासन दिया कि किसानों के लिए कुछ प्रोग्राम बनाया जायगा और अंत में उन्होंने ऐसा किया भी। वह पीछे "फैजपुर किसान-कार्यक्रम" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। फैजपुर में "अखिल भारतीय किसान-सभा" का दूसरा अधिवेशन हुआ और उसमें स्वामी जी ने किसानों की शक्ति प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया। किसानों के कई जत्थे कई सौ मील से फौजी ढंग से मार्च करते हुए फैजपुर पहुँचे। कांग्रेस नगर के झंडा-चौक में एक बड़ी जबर्दस्त सभा हुई, जिसके अध्यक्ष प्रो० रंगा थे। नेहरू जी भी वहाँ थोड़ी देर के लिए आये और उन्होंने दो-चार शब्द भी कहे।

फैजपुर में स्वामी जी ने इस बात के लिए बहुत कोशिश की कि किसान प्रतिनिधियों को कांग्रेस पंडाल में जाने का टिकिट मुफ्त या रियायती दाम में मिले, पर इसमें कुछ सफलता न हुई। जब गांधी जी से बातें कीं तो उन्होंने कहा कि गरीबों की निगाह से कांग्रेस की फीस पाँच रुपये की बजाय एक रुपया कर देनी चाहिए, पर वास्तव में कुछ नहीं हुआ। साथ ही कांग्रेस ने चुने हुए मेंबरों और पदाधिकारियों के लिए खादी पहिनना जरूरी बना दिया। स्वामी जी ने कहा—"पाँच रुपया फीस गरीब नहीं दे सकते और महँगी होने के कारण वे खादी भी वे नहीं पहिन सकेंगे, इस कारण अब कांग्रेस धनियों और महाजनों के हाथ में चली जायगी। सो भी गांधी जी की राय से वे दरिद्र नारायण के अच्छे पुजारी निकले।" इस पर डॉ० पट्टाभिसीतारमैया ने धीरे से स्वामी जी से कहा—"यू आर ए टेरीबल स्वामी !" (आप तो एक भयंकर स्वामी हैं !)

इसके पश्चात् १९३७ में चुनाव में कांग्रेस की जीत हुई तथा उसके मंत्रिमंडल कई प्रांतों में शासनारूढ़ हो गये। बिहार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसानवादियों को स्वामी जी ने चुनाव में सफल कराके कौंसिल में भिजवाया और अन्य कांग्रेस नेताओं के जीतने में बहुत कुछ सहायता की। चुनाव समाप्त होते ही "बिहार प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन" हुआ। उसमें प्रस्ताव किया गया कि कीमत देकर जमींदारियाँ खत्म कर दी जाएँ। किसान प्रतिनिधियों ने संशोधन पेश किया कि बिना कीमत दिये ही जमींदारी खत्म की जाय। कुछ जमींदारों ने पुराने ग्रंथों से जमींदारी को सिद्ध करना चाहा, पर स्वामी जी ने पांडित्यपूर्ण ढंग से उसका खंडन कर दिया। संशोधन पास हो गया, पर उस समय वह अमल में न लाया जा सका।

चुनाव के बाद बिहार में कांग्रेस मंत्रिमंडल बनाकर उसने किसान और मजदूरों की भलाई के लिए कोई काम न किया। उनकी हड़तालें और आंदोलन पहले की तरह ही जारी रहीं। इस पर स्वामी जी ने दो पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित करके मंत्रिमंडल की इस उदासीनता की आलोचना की। इनमें से पहली थी—'दी अदर साइड ऑफ दी शील्ड' (समस्या का दूसरा पहलू) और दूसरी थी 'रेंट रीडक्शन इन बिहार, हाउ इट वर्क्स (बिहार में लगान का घटाया जाना और उसकी वास्तविकता) इन पुस्तकों के कारण प्रांत में बड़ा शोरगुल मचा और कांग्रेस नेता समझने लगे कि स्वामी जी कांग्रेसी—मंत्रिमंडल को बदनाम करना चाहते हैं, पर स्वामी जी की ऐसी नियत कदापि न थी। इस आक्षेप के निराकरण के लिए स्वामी जी कुछ समय के लिए अमरनाथ यात्रा के लिए कश्मीर चले गये। पर उनके पीछे भी किसानों के बड़े-बड़े प्रदर्शन होते रहे। एक "किसान रैली" में तो दो लाख की भीड़ हो गई थी। कांग्रेसी मंत्री ऐसी किसान सभाओं से बहुत घबड़ाते थे। पर किसान-सभा का काम बढ़ता ही गया और सन् १९३७ से १९४० तक बछवारा, वैनी और मोतिहारी आदि स्थानों में विशाल कान्फ्रेन्स होती रहीं। इनमें महा पंडित राहुल सांकृत्यायन और जयप्रकाशनारायण आदि जैसे मजदूर पक्षपाती नेता अध्यक्ष होते रहे। धीरे-धीरे किसानों का जोश बढ़ता गया तथा जमींदार तथा सरकार दोनों उससे भयभीत होने लगे। सन् १९३८ में स्वामी जी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पटना के सेक्रेटेरियट तक एक मील लंबा जलूस लेकर गये। उस समय किसान यह नारा लगाने लगे थे—

'लट्ठ हमारा जिंदाबाद'

इस नारे को सुनकर कांग्रेस में काफी गर्मा-गर्मी हुई और महात्मा गांधी, महादेव देसाई, राजेंद्र बाबू आदि प्रधान नेताओं ने इसका विरोध किया। स्वामी जी पर हिंसा-प्रचार का दोष लगाया गया। इस पर स्वामी जी ने प्रांतीय और जिला कांग्रेस कमेटियों से त्यागपत्र दे दिया।

स्वामी जी ने इस बात से इनकार नहीं किया कि उन्होंने आत्मरक्षार्थ किसानों को लाठी-डंडा प्रयोग करने की अनुमति दी है। जमींदारों के नौकर किसानों को जूते और डंडे से 'दुरस्त' करते रहते थे। उनके घर की चीजें लूट लेते थे, बहू-बेटियों की इज्जत भी नहीं बच पाती थी। स्वामी जी ने जमींदारों को सैकड़ों बार समझाया कि इन गैरकानूनी कामों को बंद कीजिये, पर वे अपनी हरकतों से बाज नहीं आए। तब उन्होंने किसानों को भी लाठी और डंडे का उपयोग करने के लिए ललकारा। इस पर कई जगह किसान और जमींदारों की मुठभेड़ हो गई, जिसमें कहीं-कहीं जमींदारों को मार खानी पड़ी। इन बातों को लेकर गांधीवादी बिगड़े। कुछ स्वामी जी के अनुयायी भी कहने लगे कि इसे बंद कीजिये। इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि गांधी जी ने भी कई बार अहिंसा के नाम पर कायरता की अपेक्षा हिंसा को ठीक बताया है। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने इसके विरुद्ध एक प्रस्ताव भी पास किया। इस प्रकार जो स्वामी जी, गांधी जी के संपर्क में आकर सन् १९२० में कांग्रेसी बने थे, वे १९४० में किसान-नेता और समाजवादी होकर कांग्रेस से पृथक् हो गये।

इसके बाद स्वामी जी के अनुयायियों ने अनेक स्थानों में किसान—सत्याग्रह आरंभ किया, जिससे जमींदारों के छक्के छूट गये। बड़हिया का आंदोलन तीन वर्ष तक चलता रहा। उसके संचालक पं० कार्यानंद शर्मा दो बार जेल भेजे गए। दूसरा सत्याग्रह 'रेवड़ा' में हुआ, जिसमें पच्चीस हजार किसान और उनके स्त्री-बच्चे धर्म युद्ध करके मर-मिटने को तैयार थे। स्वामी जी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तूफानी दौरा करके किसानों में जोश भर रहे थे। कितनी ही जगह किसान नेता पीटे गये, किसानों पर गोली चलाकर उनका खून बहाया गया, महापंडित राहुल सांकृत्यायन दो बार जेल गये और वहाँ अनशन किया। अमवारी नामक स्थान के सत्याग्रह की संचालन व्यवस्था श्रीरामवृक्ष ब्रह्मचारी ने की थी, जिसमें लाल वस्त्र धारण किये एक महिला दल भी कार्य कर रहा था। जब पुलिस ब्रह्मचारी जी को पकड़ने आई, तो इन स्त्रियों ने उनको घेरकर ऐसा रोका कि पुलिस के सिपाही भी दंग रह गये। ब्रह्मचारी जी ने जेल जाकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अनशन किया और ६० दिन तक भूखे रहकर प्राण दे दिये।

कांग्रेस से अलग होकर स्वामी जी किसान-आंदोलन को बराबर आगे बढ़ाते गये। उनका कार्यक्षेत्र केवल बिहार ही नहीं रहा, वरन् "अखिल भारतीय किसान-सभा" के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कुमिल्ला (बंगाल), रानी परज (गुजरात), पलासा (आंध्र) आदि के किसान-सम्मेलनों में जाकर वहाँ भी किसानों के उद्धार की आवाज उठाई। वे तीन बार पंजाब में भी गये, जहाँ सिकंदर हयातखाँ के मंत्रिमंडल ने उन पर रोक लगा दी। महाराष्ट्र, बंगाल, मध्यप्रदेश, आसाम आदि सभी प्रदेशों में उनके प्रभावशाली दौरे हुए, जिनमें किसान मीलों तक खड़े होकर उनका स्वागत करते थे। इस प्रकार स्वामी जी ने किसान-आंदोलन और उसकी माँगों को देशव्यापी बना दिया।

इस किसान-सेवा के फलस्वरूप स्वामी जी को फिर गिरफ्तार कर लिया गया और अप्रेल १९४० से मार्च १९४२ तक वे जेल में बंद रहे। जब वे वहाँ से छूटे, तो योरोपीय महायुद्ध पूरे जोर से चल रहा था और सब प्रकार के आंदोलन दबे हुए थे। पर फिर भी स्वामी जी अपने जीवन-लक्ष्य किसान-संगठन को ठोस आधार पर स्थापित करने में लग गये और सन् १९५० तक, जबकि उनकी जीवन लीला समाप्त हुई, किसान सेवा के मार्ग से कभी इधर-उधर नहीं हटे। इस प्रकार स्वामी जी ने अपना संपूर्ण जीवन अन्याय पीड़ित गरीबों के सहायतार्थ लगा दिया और इसी को संन्यास की सबसे बड़ी सफलता माना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वामी सहजानंद की गिनती हम उन लोगों में करते हैं, जो अल्प साधनों और सामान्य शक्ति से ही महान् कार्यों की पूर्ति करके दिखा देते हैं। वे एक पिछड़े हुए इलाके के ग्रामीण व्यक्ति थे और अपने घर की परिस्थिति के अनुसार आठ-दस दर्जे तक ही शिक्षा प्राप्त कर सके थे। इस प्रकार के लड़के सभी गाँवों और कस्बों में काफी तादाद में पाये जाते हैं। पर सार्वजनिक सेवा की भावना न तो स्वयं उत्पन्न करते हैं और न कोई उनको ऐसी प्रेरणा ही देता है। परिणाम यह होता है उन सबका जीवन प्रायः पेट भरने और गृहस्थी के छोटे-मोटे कामों को पूरा करने में ही व्यतीत हो जाता है। उनमें से अनेक धार्मिक कथा-वार्ता सुनते-सुनते अथवा किसी भगवा वस्त्रधारी की प्रेरणा से साधु-जीवन की तरफ भी चल पड़ते हैं। पर वहाँ पहुँचकर उनकी अधिकांश शक्ति 'पेट-पालन' में ही खर्च होती। 'राम' का नाम लेना अथवा कुछ 'जप-तप' कर लेना भी एक निरर्थक-सा दिखावा मात्र होता है। हजारों में से कोई एक साधु वेषधारी ही सच्चे अर्थों में आत्म-चिंतन और आत्मोत्कर्ष की तरफ ध्यान दे पाते हैं।

इसलिये यह कम महत्त्व की बात नहीं है कि स्वामी जी ने साधु बन जाने पर भी केवल उदर-पोषण और भजन-साधन की घिसी पिटी प्रणाली में ही संतोष न करके मानव-कर्तव्यों का ध्यान रखा। यद्यपि संन्यास-आश्रम में भी उनको मान-सम्मान तथा जीवन-निर्वाह की दृष्टि से सफलता प्राप्त हो गई थी, पर उन्होंने अनुभव किया कि इस प्रकार जनता के श्रम पर खाते-पीते रहना और उसका कुछ भी हित-साधन न करना, वास्तव में निकृष्ट श्रेणी का भिक्षुकपन है। सच्चा साधु तो वह है जो जनता से एक छटांक लेकर उसका एक सेर उपकार करे। इसके प्रतिकूल आज यह देखा जा रहा है कि दानदाता गृहस्थ तो रूखी-सूखी रोटी खाकर कठिनाई से जीवन-निर्वाह करता है और 'निष्कर्म' संन्यासी महाराज के 'दूध और फल' में दस रुपया रोज खर्च हो जाता है। इस परिस्थिति को देखकर सहजानंद जी ने अपना मार्ग बदल दिया और साधु वेश में रहते हुए भी जन-सेवा का कार्य अपनाया। इसमें भी विशेषता यह थी कि उन्होंने जो मार्ग ग्रहण किया वह पाठशाला, चिकित्सालय आदि जैसे सेवा कार्यों की तरह शांतिमय न होकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अत्यंत कंटकाकीर्ण था। उसमें निरंतर विदेशी सरकार से संघर्ष, गिरफ्तारी तथा जेल आदि की संभावना थी। पर अत्यंत विकट परिस्थितियाँ उपस्थित होने पर भी स्वामी जी कभी पश्चात्पद नहीं हुए और बड़े-बड़े आंदोलनकारियों की तरह निर्भयतापूर्वक जेल गये और वहाँ सब प्रकार के कष्टों को धैयपूर्वक सहा।

वर्तमान समय में भारती 'संन्यासी' 'त्यागी' कहलाने पर भी घोर परिग्रहशील बन गये हैं। कहाँ तो प्राचीन समय में उनके लिए यह नियम था कि किसी स्थान पर एक दिन के सिवा दूसरे दिन न टिकें और सूखी रोटी के सिवा और कुछ भोजन ग्रहण न करें। पर इन दिनों संन्यासी बड़े-बड़े मठ और 'अखाड़े' स्थापित करके रहते हैं, जिनमें से किसी-किसी की संपत्ति का परिमाण दस करोड़ रुपया तक बतलाया जाता है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि 'नागा' (नग्न) कहलाने वाले साधु कमर में सोने की जंजीर पहिन लें और उनके पास अनेक घोड़े, हाथी, मोटर आदि हों ? स्वामी सहजानंद जी ने इस ढोंग को त्यागकर सर्वथा अकिंचन वृत्ति से ही जीवन व्यतीत किया और आंदोलन के लिए अगर कभी कुछ इकट्ठा भी किया, तो उसमें से एक पैसा भी अपने पास न रखकर सब कुछ सार्वजनिक कार्य के लिए ही खर्च कर दिया।

क्या यह कम महत्त्व की बात नहीं है कि जहाँ अन्य प्रसिद्ध 'साधु-संन्यासी' सेठ-साहूकारों और धनवानों की प्रशंसा करते हैं, आशीर्वाद देते हैं, उन्हीं के यहाँ ठहरते हैं, सहजानंद जी गरीब किसानों की झोपड़ियों में ही आतिथ्य स्वीकार करते थे और उन्हीं के अधिकारों के लिये बड़े-बड़े जमींदारों और राजाओं के मुकाबले में खड़े होते थे। अनेक अवसरों पर बड़े लोगों ने उनको धन और सम्मान के प्रलोभन दिये और अपने साथ काम करने को बुलाया, पर स्वामी जी ने भूलकर भी उनकी कोठियों और राजसी भोजनों पर दृष्टिपात नहीं किया और जीवन के अंतिम क्षण तक दरिद्रनारायण का पक्ष लेकर उनका विरोध ही करते रहे। उनकी यह निस्पृह-भावना और न्याय का समर्थन ही सच्चे संन्यासी की पहिचान है।

मूल्य–तीन रुपये

मुद्रक–युगान्तर चेतना प्रेस शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

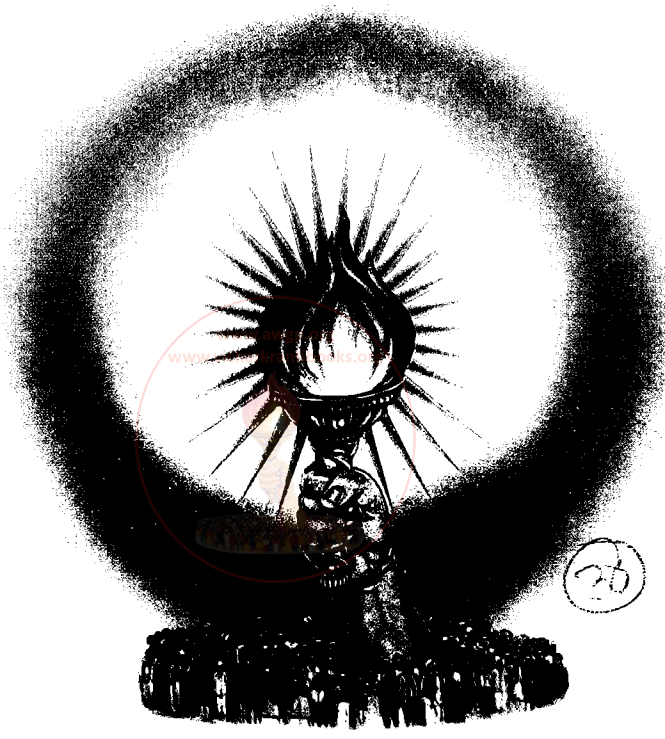

विचार क्रान्ति अभियान प्रज्ञानिकुंज,

मूल्य- तीन रुपया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्द्योषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org